

verloren sein so v. a. wirkungslos sein, keine Früchte tragen 13, 3212. विप्रनष्ट verloren, verschwunden: विप्रनष्टा अग्र्यं चायमाकर्त्ता MBh. 4, 4802. विशेयका R. 3, 53, 6. सर्वथा विप्रनष्टास्ते — नहि विप्रो गतिं ते-
यो वासं वापि MBh. 4, 877. — caus. verloren gehen lassen SADDH. P. 4, 23, b.

— संप्र sich verlieren, verschwinden: घोरत्वं संप्रणश्यति MBh. 3, 13781. संप्रनष्टे कलौ 2847.

— वि sich verlieren, verschwinden; verloren —, eitel —, wirkungslos sein; zu Nichte werden, vergehen, zu Grunde gehen: वि पु विश्वा अरातयो ऽर्था नशत नो धिये: (vgl. jedoch die Abweichung 9, 79, 4 weiter unten) RV. 10, 133, 3. यथा महाकृद् प्राप्य क्षितं लोष्टे विनश्यति M. 11, 263. माया: — क्षिप्रं विनेषुर्विडुर क्लेशा ज्ञानादये यथा Bhāg. P. 4, 11, 2. शनैः शरीरे विनाशो शोकः शरदतो मेघ इवाल्पतोयः R. 2, 44, 25. क्रिया: सर्वा विनश्यति ग्रीष्मे कुम्भितो यथा Hit. I. 117. अशनिः पुरा नु साक्षे-
धती वि नश्यतु RV. 8, 27, 18. उताधीतं वि नश्यति 1, 170, 1. धर्मेषां चित्तं वि नेशत् 10, 128, 6. वि च नशन्न इषौ अरातयः 9, 79, 4. Cat. Br. 14, 4, 4, 8. Shap. Br. 3, 7. न स्कन्दते न व्यथते न विनश्यति कर्हिचित् । वरिष्ठ-
नमिहोत्रेभ्यो ब्राह्मणस्य मुखे कृतम् ॥ M. 7, 84. एवं तु सुमहत्कार्यं विन-
श्येत् R. 5, 29, 30. अन्ते वीजमुत्सृज्यतैव विनश्यति M. 10, 71. स विन-
श्यति der (der Kranke) ist verloren Suçr. 1, 111, 8. 119, 6. अवमत्ता वि-
नश्यति geht zu Grunde M. 2, 163. 3, 57. 58. 65. 4, 174. 7, 12. 39. 8, 22. 10, 61. MBh. 1, 6162. Bhāg. 8, 20. R. 3, 43, 1. 31, 35. Bhārtr. 2, 34. Varāh. Brh. S. 6, 8. 73, 10. 97, 12. Phab. 37, 7. विनश्यत् MBh. 3, 2289. विनशिष्य-
ति 1, 3491. 6163. 13, 1815. 1894. 1898. 1899. R. 2, 51, 15. 16. 63, 44. वि-
नश्यामि MBh. 3, 2861. 2864. Bhāg. 18, 58. R. 3, 43, 16. 17. 54, 25. 6, 14, 9. Bhāt. 16, 26. विनश्यति (sic) MBh. 1, 4973. med. MBh. 1, 3147. 6137. 3, 10700. R. 5, 80, 21. विनष्ट verloren gegangen, verschwunden: अस्थि-
विनष्टश्लथ्य Suçr. 1, 24, 10. सोदरी पुनरस्य ग्रहणविल्लवे विनष्टा । तदन्वे-
षणाय यतिष्ये Mālav. 9, 3. चक्षुस् MBh. 3, 16665. ऽदृष्टि Bhāg. P. 3, 1, 6. धर्मे देशे Rāga-Tar. 1, 314. zu Grunde gegangen, umgekommen: वेपो विनष्टो ऽ विनयात् M. 7, 41. MBh. 1, 6188. 2, 2518. क्वा कृतास्मि विनष्टा-
स्मि भीतास्मि विजने वने ich bin verloren 3, 2364. Pañkāt. 21, 3. I. 324. विनष्टा वा प्रनष्टा वा भक्षिता वापि मैथिली R. 5, 13, 37. विनष्टं वा प्रनष्टं वा न युक्तमनुशोचितम् 71, 7. नष्टं विनष्टं कृमिभिः शकृतं विषमे मृतम् (प-
शुम्) M. 8, 232. verdorben, schlecht geworden (von Sachen) 2, 64. Jāgñ. 2, 59. 268. — caus. verschwinden machen, vertreiben, vernichten, ver-
derben, zu Grunde richten, umbringen: त्वं पुरं इन्द्रं व्योमसा नाशयध्वै RV. 8, 86, 14. 1, 53, 6. अशंस्तीर्त्वि हि नो नशतः 6, 48, 17. ब्रह्मन्नेव विशे वि नाशयति TS. 2, 3, 3, 5. एतां अग्र्यं शिखां विनाशयेत् Cat. Br. 5, 3, 1. AV. 3, 1, 5. तानैषधे त्वं गन्धेन विषूचीनान्वि नाशय 8, 6, 10. 19, 15, 2. पृथिवी-
म् MBh. 14, 54. ज्ञानपदै R. 1, 26, 27. 33, 27. 63, 11. 3, 36, 16. 5, 37, 42. Va-
rāh. Brh. S. 39 (38), 8. Kathās. 23, 77. Ghat. 14. महास्नेहो विनाशितः Pañkāt. I. 1. समीक्ष्य स (दाण्डः) धृतः सम्यक्सर्वा रञ्जयति प्रजाः । असमी-
क्ष्य प्रणीतस्तु विनाशयति सर्वतः ॥ M. 7, 19. ज्येष्ठः कुलं वर्धयति विनाश-
यति वा पुनः 9, 109. नरं ह्यजार्तिमत्तं च वातव्याधिर्विनाशयेत् aufreiben Suçr. 1, 120, 1. R. 2, 24, 22. ऊर्ध्वकरो दिवसरस्ताम्रः सेनापतिं विनाश-
यति stürzt ihn in's Verderben Varāh. Brh. S. 3, 21. 25. 11, 54. 83 (80, c). 6. अवर्हान्मांसभूतान्नः क्रव्यादावुर्विनाशयेत् umbringen MBh. 1, 8382.

16, 275. Hariv. 4251. R. 3, 16, 18. Pañkāt. 71, 24. 87, 24. 98, 22. Çuk. in LA. 43, 1. मा नः सर्वान्वयनीनशः MBh. 1, 4169. sich verlieren machen, in's Leere gehen machen: अदित्यं ऐषामन्त्रं वि नाशयतु AV. 11, 10, 16. zugeben, dass Etwas zu Grunde geht Rāgh. 2, 56. Auffallend ist die Ver-
bindung mit einem gen. in der Stelle: विनाशयति पातो ऽस्मिन् लोका-
नामसकृद्यतः Sūrjās. 11, 4. Der aor. in der intrans. Bed. des simpl. zu Grunde gehen, umkommen MBh. 4, 426. 5, 767. R. 2, 110, 30; vgl. das caus. vom simpl. — desid. vom caus. विनाशयिषितः (ohne Redupl.!) Daçak. 112, 3 v. u.

— अनुवि nach oder mit Jmd verschwinden, — vergehen, — zu Grunde gehen: नदीनां फेनौ अनु तान्वि नश्य AV. 6, 113, 2. Cat. Br. 14, 5, 4, 12. 7, 3, 13. प्रजाश्च तस्य नीयन्ते ततः सो ऽनुविनश्यति MBh. 12, 3400. कामानुसारी पुरुषः कामाननुविनश्यति 6303.

— प्रावि verderben, zu Grunde gehen: तस्मात्त्वं प्रविनश्यसे R. Gorr. 1, 36, 27.

— सम् zu Grunde gehen: इत्वाकुर्वंशे संनष्टे R. 5, 31, 13.

2. नष्ट (= 1. नष्ट) adj. verloren gehend, zu Grunde gehend; nom. नक् und नट् P. 8, 2, 63, Sch. Vop. 3, 149. — Vgl. नीव^०.

3. नष्ट (so v. a. 1. अष्ट; vgl. नत्, नैशति, नैशते, नैशत् Naigh. 2, 18; अग्नि)नट्, (प्र)नक् (अनक् und अनाट् werden vom Schol. zu P. 6, 4, 73 und Siddh. K. 222, a hierher gezogen, können aber füglich auf 1. अष्ट zurückgeführt werden); नैशति aor. erreichen, erlangen; treffen, zu Theil werden: ज्योतिर्नशीमहि RV. 10, 36, 3. 10. रयिम् 2, 30, 11. 5, 4, 11. यत्कामयध्वे नशथा तदिन्द्रे antreffen, finden bei 2, 14, 8. आ नः सेमिं स्वधरं इयानो अत्यो न नशते (die Dehnung ist für metrisch anzusehen) eintreffen Vālak. 2, 5. — नैश्टे मर्ते नशते RV. 6, 3, 2. 7, 82, 7. नकिः शवांसि ते नशत् 8, 57, 8. न नः पश्चादघं नशत् 2, 41, 11. नू स्रवानं दिव्यं नंशितं देवाः 6, 31, 12. न ततैः अग्न्या उषसौ नशत् 1, 123, 11. 163, 9. 8, 31, 17. न स्नेधतं रयिर्नशत् 7, 32, 21. — caus. eintreffen machen (?): पुवं कवी ष्टः पर्यश्चिना रथं विशो न कुत्सो जरितुर्नशायथ RV. 10, 40, 6.

— अचक् herbeikommen: अचक् नति द्युमतं रयिं दाः RV. 5, 24, 2.

— अग्नि erreichen, erlangen, treffen: नशदग्निं द्रविणं दीध्यानः RV. 4, 23, 4. मा नो दीर्घा अग्निं नशतमिन्द्राः 2, 27, 14. मा नो रत्नौ अग्निं नञ्जातुमाव-
ताम् 7, 104, 23. 8, 20, 16.

— उद् erreichen: उत्तरं सुममुत्रशम् RV. 2, 23, 8. 1, 164, 22.

— परि dass.: नहि ते अतः शवसः परीणशे RV. 1, 54, 1.

— प्र erreichen, treffen: प्र तमिन्द्रं नशीमहि रयिम् RV. 8, 6, 9. प्र वः स धीतये नशत् 1, 41, 5. Hierher ist ohne Zweifel auch प्रणक् zu stellen, welches von Sir. auf पर्च् zurückgeführt und vom Pañt. und Padap., welche beide nicht in प्र und नक् trennen, vermuthlich eben so aufge-
fasst wird. Dagegen sprechen Form, Betonung und Bedeutung; vgl. P. 2, 4, 80, Sch. 8, 2, 63. मा वो दुर्मतिरिक् प्र णङ्गः RV. 7, 56, 9. 94, 8. मा प्र णक्तस्य नो वधः 2, 23, 12. 1, 18, 3.

— वि erreichen: अपाश्रितस्य वि नशत्यर्थम् RV. 10, 27, 20. आमासु पृ-
थु पुरा अग्रमृष्यं नारतयो वि नशन्नानृतानि 2, 35, 6.

— सम् dass.: सो अस्य मर्त्तमा न संनशे RV. 8, 3, 10. VS. 23, 15. चनुषा चन संनशे Vālak. 6, 5.

नश (von 3. नष्ट) m. nom. act.; s. दृषाश. दुषाश. नश Vop. 26, 33, v. l. ist